B.A III (Hons) धर्म दर्शन Philosophy

पंचम पत्र

आत्मा के अमरत्व के प्रमाण

मानव को एक सामाजिक प्राणी कहा जाता है। समाज से अलग मानव की कोई स्वतंत्र सत्ता नहीं है। मानव या उसके शरीर का एक हिस्सा जो आत्मा के नाम से पुकारा जाता है, मानव के मृत्यु के बाद भी अपना अस्तित्व कायम रखता है। प्रारम्भिक काल से लेकर आज तक हर समय समाज आत्मा के अमरता के सम्बन्ध में सोचता आ रहा है। यहाँ आत्मा की [illegible] सम्बन्धित है कि शरीर के परित्याग के बाद वह रह जाती है। आत्मा का अस्तित्व रह जाता है या नहीं। प्लेटो ने कहा है कि आत्मा का स्वभाव और उसका अन्त संशय पूर्ण है। इसी कारण आत्मा की अमरता का विचार धर्म-दर्शन के लिए समस्या बन जाता है।

अमरत्व की भावना मानव की सनातन प्रिय एवं लोकप्रिय भावना रही है। प्रत्येक धर्म में किसी न किसी रूप में आत्मा की प्रधानता दी गयी है। इसलिए अमरत्व की भावना को सार्वभौम विश्वास कहने में किसी प्रकार की अतिशयोक्ति नहीं हो सकती। लेकिन इसके साथ कुछ अनिश्वरवादी लोग आत्मा की अमरता में विश्वास नहीं करते। अमरत्व का विचार एक ऐसा विचार है जिसे अलग नहीं कर सकते।

अमरत्व की समस्या विज्ञान के लिए भी उसी प्रकार एक समस्या है जिस प्रकार धर्म दर्शन के

गया। विज्ञान भौतिक पदार्थों का अध्ययन है.
इसलिए वह आत्मा के सम्बन्ध में जो एक आध्यात्मिकता है कुछ भी नहीं कह सकता। और विज्ञान केवल यह मानता नहीं कि वह आत्मा के अस्तित्व को सिद्ध है।

अमरत्व के प्रमाण — आत्मा की अमरता को सिद्ध करने के लिए सर्वप्रथम यह दिया जाता है कि यह एक ऐसी शक्ति है जो भौतिक पदार्थों में संचालन करता एवं principle of movement है. इसलिए वह अविनाशी है। आत्मा एक ऐसी शक्ति है जो भौतिक पदार्थों का निर्देशन करती है आत्मा इसी प्रकार अमर है। जिस प्रकार ईश्वर। इस कारण शंकराचार्य ने आत्मा और ईश्वर को एक दूसरे से भिन्न न मानकर एक माना है।

डेकार्ट ने आत्मा को एक द्रव्य कहा है जिसका आधार भी द्रव्य है। और इन आत्मा का स्वरूप चैतन्य है जिसके अभाव में आत्मा की कल्पना नहीं की जा सकती। किसी भी द्रव्य का विनाश सम्भव नहीं है क्योंकि द्रव्य एक ऐसी वस्तु है जो अविनाशी है इसलिए आत्मा भी अविनाशी माना जाता है।

लाइबनीज ने आत्मा को मोनाड कहा है। यह एक आध्यात्मिक परमाणु है जिसे लाइबनीज आत्मा कहते हैं। मोनाड अनेक हैं। किन्तु सभी मोनाड विकास के आधार पर उन्हें एक क्रम में रखा जाता है जिसमें सबसे ऊँचा स्थान ईश्वर का है। लाइबनीज के अनुसार मोनाड ही आत्मा है इसलिए यह बात साबित हो जाती है कि आत्मा का विनाश सम्भव नहीं है।

और मोनाड एक प्रत्ययवादी होने के कारण निरपेक्ष

को अमरत्व सिद्ध मानता है अतः भी आत्मा को स्वतः सामान्य सोद्देश्य आत्मा परिपूर्ण है जिसमें न परिवर्तन और न ही विनाश होता है अतः आत्मा अमर है।

कान्ट के नैतिक युक्ति के आधार पर

आत्मा की अमरता को सिद्ध करना चाहता है युक्ति नैतिक में एक नैतिक संकल्प है नैतिक संकल्प का स्वरूप निरपेक्ष है इस लिए कान्ट ने भी आत्मा को अमर माना है अतः आत्मा अमरणशील है

नैतिक दृष्टिकोण से भी आत्मा की अमरता प्रमाणित होती है कर्म सिद्धान्त के अनुसार मानव को कर्म का फल अवश्य मिलता है अतः कर्म सिद्धान्त के आधार पर भी आत्मा की अमरता साबित हो जाती है

आत्मा की अमरता को सिद्ध करने के लिए यह एक तर्क दिया जाता है कि वह एक ऐसी सत्ता है जो नैतिक वस्तुओं को निर्देशन करती है इससे आत्मा की अमरता प्रमाणित होती है अमरत्व की भावना कर्म करने के लिए प्रेरणा प्रदान करती है प्रेरणा जीवन के लिए आवश्यक है अतः आत्मा अमर है

भारतीय दर्शन में चार्वाक दर्शन आत्मा की अमरता का खण्डन करता है चार्वाक आत्मा को शरीर से भिन्न नहीं मानता। आत्मा शरीर का दूसरा नाम है। आत्मा शरीर है और शरीर आत्मा। शरीर का अन्त ही आत्मा का अन्त है शरीर के नाश के साथ ही आत्मा का नाश हो जाता है अतः आत्मा अमर नहीं है

सगुण और निर्गुण दोनों की व्याख्या की है
शंकर के अनुसार सत्ता की तीन कोटियाँ है
(i) पारमार्थिक (ii) व्यावहारिक (iii) प्रातिभासिक
शंकर के अनुसार ब्रह्म ही एक मात्र सत्य है। ब्रह्म का साक्षात्कार ही ज्ञान ब्रह्म है। वह सर्वोच्च ज्ञान है ब्रह्म आनन्द सर्वव्यापी तथा सर्वशक्तिमान है। वह जगत् का आधार है। जगत् ब्रह्म का विवर्त है परिणाम है। शंकर ने केवल ब्रह्म को ही विश्व का आधार माना है शंकर के अनुसार ब्रह्म ही एक मात्र सत्य है जगत् मिथ्या है। जगत् माया, या अविद्या के अलावा और कुछ नहीं है

शंकर ने ब्रह्म को सभी की आत्मा कहा है। सभी व्यक्तियों को अपनी आत्मा की अनुभूति है। ब्रह्म की उत्पत्ति वह आदि निकाय क्योंकि होता श्रुति ग्रन्थ भी ब्रह्म से सम्पूर्ण जगत् की उत्पत्ति हुई है इसके ब्रह्म की सत्ता प्रमाणित होता है इस प्रमाण को तात्विक प्रमाण कहा जाता है

शंकर का ब्रह्म अपरिवर्तनशील है। उसका न विकास होता है और न रूपान्तर होता है वह निरन्तर एक समान रहता है शंकर ब्रह्म को अनिर्वचनीय माना है उपनिषद् में ब्रह्म को नेति नेति अर्थात् यह नहीं है कहकर वर्णन किया गया है। ब्रह्म को अनिर्वचनीय का अर्थ यह नहीं कि वह अज्ञेय है। ब्रह्म की अनुभूति होती है। इस प्रकार ब्रह्म निर्गुण, निर्विशेष और निराकार है। शंकर ने ब्रह्म को भावात्मक व्याख्या किया और कहे सत् है जिसका अर्थ है कि वह असत् नहीं है चित् है जिसका अर्थ है वह अचित नहीं